IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मोहन राकेश की कहानियो में चरित्र चित्रण व जीवन दृष्टि

प्रियंका *

(शोधार्थी , हिंदी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर)

''कहानी हमेशा ही किसी विशेष परिस्थिति में मनुष्य के मन और अनुभवों; यानि मनोविज्ञान को समझने–संप्रेषित करने का एक प्रयत्न है ।''[1] स्वातंत्र्योत्तर कहानियों के संदर्भ में राजेन्द्र यादव के इस कथन को राकेश की कहानियाँ पूर्ण रूप से प्रमाणित करती हैं । राकेश अपनी कहानियों के माध्यम से परिस्थिति विशेष में या तो व्यक्ति की मनःस्थिति का विश्लेषण करते हैं; उसके मन की थाह लेने का प्रयत्न करते हैं या परिस्थिति विशेष में व्यक्ति संबंधों का विश्लेषण करते पाये जाते हैं । स्वयं राकेश के शब्दों में – *''रचना का क्षेत्र मनुष्य के अन्तर्मन और उसकी अतःवृत्तियाँ होती हैं । जिनका अनुकूल संगति में चित्रण किया जाता है ।''*[2]

'नन्हीं' और *'भिक्षु'* कहानियों के पात्रों की मनःस्थिति, क्षण की अनुभूति के लेखे–जोखे का यह क्रम उनकी कहानी यात्रा के विकास के साथ निरन्तर बढ़ता ही गया ।

राकेश की कहानियों की पात्र योजना स्थापित मानदण्डों को नकारती हैं । उनकी कहानियाँ राजा–रानी या परियों की कहानी नहीं कहती और न ही वह तिलिस्म से रहस्य खोलती है और न ही शूरवीरों की शौर्य गाथाओं का बखान करती है । उन्होनें तो अपने इर्द–गिर्द के जीवन से जीवंत पात्र चुने हैं जो सामाजिक स्तर पर तमाम संकटों से घिरे हैं । पारिवारिक स्तर पर टूटे हुए हैं, निजी स्तर पर भी जिन्हें चैन नहीं, वे अपने से ही ऊब चुके हैं । राकेश इन व्यक्तियों के अन्तर्मन में प्रवेश कर उनके भीतर को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं । वे उन्हें पूर्णतया समझना चाहते हैं और इसी पूर्णता से उन्हें अपनी तमाम अच्छाईयों और बुराईयों के साथ एक सजीव और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करते हैं । अतः उनकी कहानियाँ एक ही पात्र के इर्द–गिर्द घूमती हैं । उनका यह **'एक पात्र केवल मनुष्य'** है, उसका कोई धर्म नहीं, वर्ग नहीं, प्रान्त नहीं – यहाँ तक की कोई नाम भी नहीं। यह गुमनाम, निरर्थक जीवन को ढोते तथा जीवन को फालतू समझते पात्र अपने उलझनों भरे टकराते रहते हैं तथा अन्तर्विरोधी स्थितियों से जूझते रहते हैं । जब–जब राकेश ने अपनी पैनी निगाहों से इस मनुष्य को उसके पूरे परिवेश के साथ अनवेषित करने का प्रयत्न किया – तब–तब एक कहानी बनती गई । एक ऐसी कहानी जो इसकी–उसकी स्वयं की खोज में लगी रहती है और उसके पात्र स्वयं को समझने में लगे रहते हैं । जीवन के बाह्य संघर्षों को अनचीह्ना कर ये अन्तर्मुखी पात्र अपने ही अन्तर्द्वन्द्व के चक्रवात् में चक्कर–घिन्नी की तरह घूमते रहते हैं ।

[1] एक दुनिया समानान्तर :– राजेन्द्र यादव : पृष्ठ संख्या 29
[2] मोहन राकेश परिवेश : पृष्ठ संख्या 185

➢ ***नारी पात्र :–*** राकेश ने नारी मन की शाश्वत् व्यथा को नितांत नये संदर्भों में उठाया है । उनके नारी पात्र न तो देवी की गरिमा को छूते हैं और न ही दानवी या कुलटा की श्रेणी में आते हैं । उनके नारी पात्र तो महज नारी हैं । वह नारी जो अपनी समस्त दुर्बलताओं तथा विवशताओं में जीते हुए अस्मिता की लड़ाई में जुटी हुई है । ऐसी नारी जो परम्परागत् नारी की भांति पति को परमेश्वर मानकर मात्र समर्पिता का जीवन नहीं जी सकती; न ही जीना चाहती है । वह तो अपने अहम् को सुरक्षित रखते हुए अपनी अस्मिता और अस्तित्व की लड़ाई लड़ती रहती है ।

अस्तित्व के अभाव में इनके अधिकतर नारी पात्र एक ढर्रे को ढ़ोते हुए एक खीझ अनुभव करते हैं तभी तो *'खाली'* की तोषी कुछ इस तरह का अनुभव करती है और कहानी का अंत होता है, कुछ इस तरह – *''उसने जूठी प्यालियां उठाकर रसोई में रख दीं । गुड़्डो की किताबें समेटकर एक तरफ कर दीं । पसीने से शरीर तरबतर हो रहा था, इसलिए गुसलखाने में जाकर फिर एक बार टोंटी खोल दी । नल के अन्दर से कुछ देर वही खखारने की परिचित आवाज़ सनाई देती रही, फिर एक–एक बूंद पानी नीचे रिसने लगा ।''*[3] ' और *'आखिरी सामान'* की बेला भण्डारी अपने आप को निर्जीव मानती है – ''सीढ़ियाँ उतरते हुए उन्हें लगा, जैसे वे आप नहीं उतर रहीं, घर का आखिरी सामान नीचे पहुँचाया जा रहा है ।''[4]

इस प्रकार सभी नारी पात्र कहीं गहरे में यह खिन्न भाव लिए रहते हैं कि उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है । एक प्रश्न पुनः–पुनः उनके मन में टकराता रहता है कि पुरूष उनके प्रति अपनी हर भावना–दुर्भावना उन पर क्यों लादते रहते हैं । गरीब नौकरानी काशी भीगे स्वर में स्वीकार कर लेती है – 'मर्द के सामने किसी का बस चलता है ?' पर सुशिक्षिता आधुनिक बेला, मनोरमा तथा तोषी इस दबाव को स्वीकार नहीं कर पाती । अतः अंदर ही अंदर घुटती रहती हैं, छिलती रहती हैं ।

बदलती परिस्थितियों ने नारी को स्वयं ही एक नये ढाँचे में तैयार कर दिया है । इस नये परिवर्तन को *'नये बादल'* कहानी कुछ इस तरह स्पष्ट करती है – *''उसकी नज़र अब भी सुकेत जाने वाले रास्ते पर लगी थी और वह रह–रहकर सोच रहा था कि उस कागज़ की लिपि का उन लोगों के साथ क्या संबंध हो सकता है और आखिर वे एक–दूसरे के क्या लगते हैं.....?''*[5] '

इस प्रकार बदलते वक्त ने नारी को नये समीकरणों में कस दिया है ।

➢ ***पुरूष पात्र :–*** राकेश की कहानियों के पुरूष पात्र नायक या खलनायक नहीं हैं । वे देवता या काल्पनिक शूरवीर भी नहीं हैं। उनके पुरूष पात्र महानगरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित जीवन चरित्र हैं, जो एक स्वतंत्र इकाई नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानसिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिवेश का एक अविभाज्य अंग है जो अपने–अपने संदर्भ में अपनी–अपनी समस्याओं से जूझते रहते हैं । इस जीवन की विडम्बनाओं और विभ्रमों को झेलते रहते हैं । इस प्रकार चेतना के स्तर पर एक होते हुए भी, अकेले होते हुए भी, बोध के स्तर पर अपने परिवेश के पूरे प्रभावों से जुड़े होते हैं, समय बोध से संपृक्त होते हैं । राकेश ने अपनी कहानियों में ऐसे ही पात्रों को लिया है । वे तो परिवेश से आदमी को उठाते हैं और उसके मन की परत–दर–परत हटाते चलते हैं ।

विचित्र दशा में जी रहे मिस्टर भाटिया जैसे व्यक्ति जीवन भर मन्सूबे बाँधते रहते हैं और करते कुछ भी नहीं हैं । *'ज़ख्म'* का 'वह' भी एक अपने ही ढंग का आदमी है जो अपने ही ढंग से जीवन जीता है – आत्मनिर्वासित, अकेलापन तथा बेगानेपन का जीवन – इसका अहसास राकेश ने कहानी के शुरू में ही भर दिया है । *''हाथ पर खून का लोंदा.....सूखे और चिपके हुए गुलाब की तरह। फुटपाथ पर औंधे पीपे से गिरा गाढ़ा*

[3] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 33
[4] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 179
[5] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 310

कोलतार.....सर्दी से ठिठुर और सहमा हुआ । एक–दूसरे से चिपके पुराने कागज़.....भीगकर सड़क पर बिखरे हुए । खोदी हुई नाली का मलबा.....झड़कर नाली में गिरता हुआ । बिजली के तारों से ढका आकाश.....रात के रंग में रंगता हुआ । चिकने माथे पर गाढ़ी काली भौहें.....उंगली और अंगूठे से सहलाई जा रहीं ।'[6] आज राजनीतिक और सामाजिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार किस प्रकार जनमानस में असंतोष उभार रहा है तथा एक विद्रोही स्वर सुनते ही सरकारी मशीनरी किस प्रकार विचलित हो उठती है, इसकी कहानी है *'परमात्मा का कुत्ता'* – *'तुम सब भी कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ । फर्क सिर्फ इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो – हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो । मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ, और उसकी तरफ से भौंकता हूँ । उसका घर इन्साफ का घर है । मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ । तुम सब उसके इन्साफ की दौलत के लुटेरे हो । तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है, मेरे मालिक का फरमान है ।'*[7]

राकेश के पात्र आधुनिक युग की संत्रास दायक स्थितियों के बीच कुलबुलाते व संघर्ष करते रहते हैं । *'मंदी'* कहानी का बुड्ढ़ा अपनी स्थितियों को एक प्याली चाय की तलाश में झेलता है तो *'क्लेम'* का पात्र अपने प्रकृत अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है । सभी किसी न किसी अवसंगति का शिकार हैं तथा फालतू होने का बोझ ढोते रहते हैं ।

राकेश आज के आदमी की संश्लिष्ट पीड़ाओं की अमूर्त परतों को पूर्ण सच्चाई के साथ पकड़ पाने में सफल होते हैं । इसीलिए उनकी कहानियाँ आधुनिक मानव की विचित्र मनोदशा का सशक्त लेखा–जोखा प्रस्तुत करती हैं ।

thou n`f"V &

यथार्थ को रूबरू देखने की ललक ही लेखक को आधुनिक बनाती है । राकेश पुराने आग्रहों से ऊपर उठते हुए यथार्थ को पकड़ने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे । कहानी उनके लिए एक दृष्टि है जो मनुष्य को उसके सामाजिक यथार्थ के रूप में स्वीकारने की समझ देती है । उनकी सम्पूर्ण कहानियाँ एक पूर्ण रचनाकार के अनेक निर्माण स्तरों या दौरों को संकेतित करती हैं ।

➢ ***पुराने आग्रहों से ऊपर उठते हुए :–*** उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार राकेश की कथा यात्रा उनके जीवन काल में अप्रकाशित कहानी नन्हीं से आरम्भ हुई । यह कहानी सन् 1944 में लाहौर में लिखी गई थी। दो परिस्थितियाँ – एक ओर माँ का अभाव अनुभव करती बालिका नन्हीं नई माँ के आने की प्रतीक्षा करती है तथा दूसरी ओर कल तक 'बेटी' सुनने की अभ्यस्त बाला आज 'माँ' सम्बोधन से समझौता नहीं कर पाती । परिस्थितियों की इसी टकराहट को उन्नीस वर्षीय राकेश जैसा समझ पाये; पकड़ पाये उसे कहानी का ताना–बाना दे दिया । पर किसी सिद्धान्त के पक्षधर नहीं बने, किसी आदर्श का बखान नहीं किया और अंत खुला छोड़ दिया । इसी में उनकी आधुनिक चेतना उजागर होती है ।

अपनी दूसरी कहानी *'भिक्षु'* में राकेश को आदर्शवाद का कोहरा धुँधला देता है । ऐतिहासिक परिवेश को लेकर लिखी गई यह कहानी क्लासिक चेतना की छाप लिये होकर भी मानव नियति की भयावहता को उभारती है । तभी तो कमलेश्वर ने लिखा है कि *'इन दोनों कहानियों में राकेश की ज्वलंत साहित्यिक यात्रा के अग्नि बीज मौजूद हैं ।'*[8]

[6] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 410
[7] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 324
[8] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ (परिशिष्ट 2) : पृष्ठ संख्या 477

बाद में परिपक्वता की ओर बढ़ते यथार्थ के व्यापक संदर्भों को पकड़ते हुए राकेश ने भी इन्हें साधारण ही ठहराया तथा मेरी प्रिय कहानियाँ संकलन में इन्हें कोई स्थान नहीं दिया – *''उनके शिल्प और कथ्य दोनों में एक तरह की कोशिश है, एक अनिश्चित तलाश का कच्चापन है ।''*

➢ ***यथार्थ का व्यापक अंकन :–***स्वयं राकेश के अनुसार *''लेखक की मान्यता बदलती रहती है । ऐसा न होना लेखक की जड़ता का प्रमाण है । जीवन भर एक ही मानसिक भूमि पर रहकर रचना करते जाना केवल शब्दों का व्यवसाय है और कुछ नहीं ।''*[9]

समय व अनुभव के साथ–साथ राकेश की मानसिक भूमि भी परिवर्तित होती गई । इस दौर की कहानियों के माध्यम से राकेश ने उन सामाजिक विद्रूपताओं की धज्जियाँ उड़ाई हैं जो व्यक्ति के चेहरे को विकृत कर रही हैं, उसके जीवन को जीने योग्य बने रहने में बाधाएँ ला रही हैं । इन कहानियों के माध्यम से राकेश ने यथास्थिति का वर्णन करते हुए व्यक्ति की प्रतिष्ठा का प्रयत्न किया है।

आर्थिक विवशता की एक अन्य दास्ताँ है – *'मन्दी'* । जहाँ का समूचा परिवेश ही आत्महत्या की प्रेरणा देने वाला है । वंचित को वेदना और वंचना को विडम्बना का स्वर मुखरित है *'उलझते धागे'* में भी । आर्थिक संघर्ष के साथ ही जुड़ा है अस्मिता हेतु संघर्ष । अस्मिता की लड़ाई सबको लड़नी है । चाहे वह निम्न वर्ग का *'मवाली'* हो चाहे वह किसी स्कूल का प्राध्यापक । संघर्ष में पलता–जूझता मध्यमवर्ग उच्च वर्ग के चकाचौंध से आकृष्ट होकर उस संसार में प्रवेश करने की महत्त्वाकांक्षा हमेशा संजोए रखता है । इस मृग मरीचिका में भटकते लोगों की कहानी कहते हैं – *'मिस्टर भाटिया'* और *'फटा हुआ जूता'* के मिस्टर राय । पर समस्त प्रयत्नों के उपरान्त भी यथास्थिति को ढोते रहना ही उनकी नियति है ।

स्वयं की पहचान :– अपने तीसरे दौर की कहानियों में राकेश न तो परिवेश से कटे रहे और न ही जुड़े रहे । उन्होनें तो व्यक्ति और समाज की अभिन्नता को स्वीकारा तथा एक पर दूसरे के पड़ते प्रभावों तथा व्यक्ति मन के संघर्षों, अन्तर्द्वन्द्वों को अपनी पैनी कलम से उभारा है । राकेश स्वयं भी इसको स्वीकारते हुए लिखते हैं– *''व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी, एक दूसरे से भिन्न और आपस में कटी हुई इकाईयाँ न मानकर यहाँ उन्हें एक ऐसी अभिन्नता में देखने का प्रयत्न है जहाँ व्यक्ति समाज की विडम्बनाओं का और समाज व्यक्ति की यंत्रणाओं का आईना है ।''*

तीसरे दौर की कहानियों में राकेश ने 'स्व' के परिवर्तित स्वरूप की अन्तर्यात्रा की है । इस सन्दर्भ में कमलेश्वर का कथन है– *''राकेश ने पूरे दौर में कथ्य की आत्मा को निरन्तर खोजा था और आत्मिक खोज की कथा को निरन्तरता दी थी ।''*[10]

राकेश ने बदलते 'आत्म' की खोज कई कोणों से की है । उसने अकेलेपन से जूझती मिस पाल के स्व में झाँक कर देखा । बिखरते संबंधों से विक्षुब्ध हैरी विल्सन भारत आकर नाम की पहचान खोकर मात्र 'साहब' बन जाते हैं । पत्नी से टूटकर वे सन्तों से जुड़ना चाहते हैं पर जुड़ नहीं पाते । मिस पाल निष्क्रियता से अकेलापन ढोती है पर विल्सन निष्क्रिय नहीं रहना चाहते । वे निश्चय ही अकेलापन बाँटने का भरसक प्रयत्न करते हैं परन्तु बाँट नहीं पाते । जिस प्रकार जीवन एक जगह रूक नहीं सकता, उसका प्रवाह तो चलता ही रहता है । उसी प्रकार राकेश की कलम रूकती नहीं वह तो जीवन क्षेत्र के बदलते सन्दर्भों को तलाशती रहती है । उसकी यह निरन्तर तलाश कभी रूकती नहीं । यद्यपि जीवन वही है, व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति भी वही है परन्तु बदलते संदर्भों में, बदलते मूल्यों के कारण जीवन को जीने वाला व्यक्ति बदलता रहता है ।

[9] मेरी प्रिय कहानियाँ :– मोहन राकेश : भूमिका – पृष्ठ संख्या 6
[10] मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ (परिशिष्ट–2) : पृष्ठ संख्या 478

महानगर की चकाचौंध में *'पाँचवें माले का फ्लैट'* का अविनाश अपनी पहचान खोकर भी किसी अपने की खोज में भटकता रहता है । जिन्दगी में बढ़ती हुई औपचारिकताओं से वह घबरा जाता है, कृत्रिमताओं से वह परेशान हो जाता है – 'वह हँस दी जाने खुशी से या आदत से । मैं मुस्कुरा दिया बिना किसी वजह के ।' यह अर्थहीन आदान–प्रदान उसे थका देता है । महानगर के लोगों की मानसिकता की झलक देने वाली कहानी *'सोया हुआ शहर'* भी कह जाता है – *''साड़ी और कोट पहने, रूमाल में सिर लपेटे, एक लड़की जीप से उतरती है । उतरकर साड़ी के बल ठीक करती है और अपने पर्स में कुछ टटोलने लगती है । जीप का गियर बदलता है और एक भारी बैठी हुई–सी आवाज़ लड़की से कुछ पूछती है ।*

यह प्रश्न रहते भी प्रकाश प्रयत्न तो करता है वह 'एक प्रयोग की असफलता को जिन्दगी की असफलता' मानने को तैयार नहीं है । पर दूसरा प्रयोग भी तो उसे मनचाहा नहीं दे पाता । जीवन की इन दो स्थितियों :– संबंध–विच्छेद व पुनर्विवाह के बीच वह पिसकर रह जाता है । किसी भी स्थिति से समझौता नहीं कर पाने के कारण प्रकाश घोर हताशा से घिर जाता है । उसका मन एक अंधे कुएँ में भटकने लगता है । उसे लगता है कि वह जड़ हो गया है । इस नरक से छुटकारा पाने हेतु वह सुदूर पहाड़ी स्थान पर पहुँच जाता है । पर उसके आहत मन को राहत वहाँ भी नहीं मिल पाती । क्योंकि उसकी छूटी हुई जिन्दगी का सूत्र उसका पुत्र पलाश भी वहीं है । वह पलाश का सान्निध्य पाने को विह्वल हो उठता है। अतीत से छुटकारा पाने की चाहना करने वाला प्रकाश अतीत को पकड़ने के लिए आतुर हो उठता है । पर सब कुछ निष्फल सा हो उठता है । संबंध–विच्छेद का करूण आघात किस प्रकार प्रकाश को झकझोर देता है इसी मनःस्थिति का साकार चित्रण है यह कहानी ।

पति–पत्नी तो संबंध–विच्छेद की पीड़ा को जैसे–तैसे भोग लेते हैं; पर उससे अधिक त्रासदायी स्थिति उनसे जन्में बच्चे की होती है । यह स्थिति तब और भी भयावह हो जाती है, जब माँ पुनर्विवाह कर लेती है । बालक अपने पुराने पिता को भूल नहीं पाता और 'नये पापा' को स्वीकार नहीं कर पाता । बालक की इसी उखड़ी मनःस्थिति का चित्रण है – *'पहचान'* ।

अकेलापन व्यक्ति को कभी–कभी असामान्य भी बना देता है । ऐसे में अपने 'ज़ख्म' ढोता व्यक्ति 'अपने को वक्त का हिस्सा नहीं निगहबान' मानता है, जीता नहीं देखता है । वह अशांत, अव्यवस्थित, अनाम तथा अकेला होकर भी बीस साल और जीने की कामना करता है ।

व्यक्ति के अन्तर्मन को समझने की अदम्य लालसा के कारण ही राकेश व्यक्ति को हर संदर्भ में अन्वेषित करने का प्रयास करते हैं । *'वारिस'* के मास्टर जी का जीवन दर्शन है – 'लाइफ इज़ बट एन एम्पटी ड्रीम' । फिर भी ये अनाम मास्टर जी अपना वारिस तो चाहते ही हैं । राकेश की कहानियों में अपने ही 'आइवरी टावर' में रहने वाला एक 'जीनियस' पात्र भी मिलता है । इस जीनियस की दृष्टि में शेक्सपीयर, गोर्की, टॉलस्टोय तथा चेखव आदि में प्रतिभा का प्रश्न ही नहीं, क्योंकि ये जो कुछ अपने आस–पास देखते थे । उसका हूबहू चित्र खींच देते थे ।

इस प्रकार अपने तीसरे दौर की कहानियों में राकेश बदलते सैल्फ को पहचानने का प्रयत्न करते हैं । जीवन की उस चुनौती को स्वीकार करते हैं जहाँ जिन्दगी सहसा रूक जाती है । न उसका कोई भूत होता है और न ही भविष्य । बस एक बड़े ही असहाय वर्तमान में 'स्व' अपनी सम्पूर्ण पीड़ा के साथ छटपटाता नज़र आता है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. एक दुनिया समानान्तर – राजेन्द्र यादव
2. मोहन राकेश परिवेश – पृष्ठ संख्या 185
3. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 33
4. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 179
5. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 310
6. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 410
7. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 324
8. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ : पृष्ठ संख्या 477
9. मेरी प्रिय कहानियाँ :– मोहन राकेश : भूमिका – पृष्ठ संख्या 6
10. मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ (परिशिष्ट–2) : पृष्ठ संख्या 478
11. हिन्दी कहानी : एक नई दृष्टि – डॉ० इन्द्रनाथ मदान
12. आधुनिकता : साहित्य के सन्दर्भ में – गंगाप्रसाद विमल
13. कहानी के इर्द–गिर्द – उपेन्द्र नाथ *'अश्क'*